निःशुल्क ई-पुस्तक

भारत

मेहरगढ़ की पहली झोपड़ी से चांद के दक्षिणी ध्रुव तक — 9000 वर्षों की एक अटूट यात्रा

जय हिंद · जय भारत

भारत का संपूर्ण इतिहास

यह पुस्तक भारत की उस यात्रा की कहानी है जो 9000 साल पहले बलूचिस्तान की पहाड़ियों में एक छोटी बस्ती से शुरू हुई और आज अंतरिक्ष युग तक जा पहुंची है।

राजाओं, योद्धाओं, संतों और क्रांतिकारियों की इस गाथा में हर अध्याय एक नए युग का द्वार खोलता है।

पाठकों के लिए

इस पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक भारत के हजारों वर्षों के इतिहास को संक्षेप में, पर पूरी गहराई और भावना के साथ प्रस्तुत करती है। हर अध्याय एक युग, एक नायक या एक निर्णायक मोड़ पर केंद्रित है — ताकि पाठक इस विशाल यात्रा को आसानी से समझ सकें।

इतिहास की कुछ तिथियां और घटनाएं विद्वानों के बीच बहस का विषय रही हैं। यहां प्रस्तुत विवरण व्यापक रूप से स्वीकृत ऐतिहासिक स्रोतों और लोक-कथाओं दोनों पर आधारित है।

विषय-सूची

अध्याय

I पहली ईंट

II मेहरगढ़ — सभ्यता का उदय

III सिंधु घाटी — समय से आगे के शहर

IV वैदिक काल — मंत्र, लोहा और दस राजाओं का युद्ध

V सोलह महाजनपद और दो जागरण

VI सिकंदर सिंधु के तट पर

VII चाणक्य की प्रतिज्ञा और साम्राज्य का जन्म

VIII अशोक — कलिंग के रक्त से धर्म चक्र तक

IX व्यापारी, राजा और रेशम मार्ग

X गुप्त साम्राज्य का स्वर्ण युग

XI हर्ष, नालंदा और एक यात्री की डायरी

XII तीन मुकुट, एक शहर

XIII सोमनाथ की लूट

XIV अंधे राजा का आखिरी तीर

XV वह आग जो बुझी नहीं

अध्याय (जारी)

XVI हीरों का शहर — विजयनगर

XVII बाबर की तोपें और गिरता ताज

XVIII जिस राजा ने जंगल चुना

XIX संगमरमर और वेदना — शाहजहां का साम्राज्य

XX महाराष्ट्र का शेर — शिवाजी

XXI संभाजी — खाल उधड़ी, आस्था अडिग

XXII वह कंपनी जो ताज बन गई

XXIII 1857 — पहली चिंगारी

XXIV नमक, खादी और लाठी वाला आदमी

XXV क्रांतिकारी — मातृभूमि के लिए लहू

XXVI सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज

XXVII आधी रात, 1947

XXVIII भारत का निर्माण — सरदार पटेल और रियासतों का विलय

XXIX गणराज्य का उदय — युद्ध, रॉकेट और चांद

XXX राख और पुनर्जन्म

भूमिका

पहली ईंट

राजाओं की कहानियों से पहले, एक सवाल — यह सब शुरू कहां हुआ?

पहली ईंट

हम अक्सर भारत का इतिहास राजाओं और साम्राज्यों से शुरू करते हैं — मौर्य, गुप्त, मुगल। लेकिन असली कहानी इससे कहीं पुरानी है। यह कहानी शुरू होती है उन गुमनाम पहाड़ियों से जहां एक शिकारी इंसान ने पहली बार घर बनाना सीखा, अनाज उगाना सीखा और अपने पड़ोसी के साथ मिलकर रहना सीखा।

इस पुस्तक में हम मेहरगढ़ की पहली झोपड़ी से चलकर सिंधु घाटी के व्यवस्थित नगरों, वैदिक ऋषियों के मंत्रों, चाणक्य की कूटनीति, राजपूतों के शौर्य, मुगलों की भव्यता और अंततः स्वतंत्रता संग्राम की उस आग तक पहुंचेंगे जिसने आधुनिक भारत को जन्म दिया। यह किसी एक राजा या राजवंश की नहीं, बल्कि उस मिट्टी की कहानी है जो हर बार राख से फिर उठ खड़ी हुई।

> इतिहास हमें यह नहीं सिखाता कि हम कितनी बार हारे — यह हमें याद दिलाता है कि हम कितनी बार फिर खड़े हुए।

जानिए

इस पुस्तक की यात्रा 9000 साल पहले के बलूचिस्तान से शुरू होकर चांद के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगे तक पहुंचती है — यानी मानव सभ्यता के सबसे पुराने कृषि प्रयोगों से लेकर अंतरिक्ष युग तक।

अध्याय एक

मेहरगढ़ — सभ्यता का उदय

जब इंसान गुफाओं से निकलकर पहली बार खेत जोतने लगा।

लगभग 7000 ईसा पूर्व

अध्याय एक · लगभग 7000 ईसा पूर्व

मेहरगढ़ — सभ्यता का उदय

आज के पाकिस्तानी बलूचिस्तान में, कच्ची मैदान के पास, मेहरगढ़ नाम की एक बस्ती में दुनिया के कुछ सबसे पहले किसान और इंजीनियर रहते थे। ये लोग खानाबदोश नहीं थे — उन्होंने मिट्टी की ईंटों से घर बनाए, अनाज रखने के लिए अलग कमरे बनाए और जौ-गेहूं की खेती शुरू की। यह उस दौर में एक अजूबा था।

खुदाई में मिले प्रमाण और भी चौंकाने वाले हैं। इंसानी जबड़ों पर पत्थर की बारीक ड्रिल के निशान बताते हैं कि दांतों का इलाज यहीं शुरू हुआ। कपास की खेती के सबूत बताते हैं कि कपड़ा बुनने की कला की जड़ें भी यहीं हैं। करीब 3500 ईसा पूर्व के आसपास ये लोग पहाड़ियां छोड़कर सिंधु नदी के उपजाऊ मैदानों की ओर बढ़ने लगे — और वहीं से एक नई, कहीं अधिक विशाल सभ्यता का जन्म होने वाला था।

> 9000 साल पहले भारत की इसी मिट्टी में डेंटिस्ट्री का जन्म हो चुका था।

जानिए

मेहरगढ़ में मिले प्राचीन जबड़ों में पत्थर की ड्रिल से किए गए दांतों के इलाज के निशान मिले हैं — यह दुनिया के सबसे पुराने ज्ञात डेंटल उपचार के प्रमाणों में से एक है।

अध्याय दो

सिंधु घाटी — समय से आगे के शहर

जब दुनिया कबीलों में लड़ रही थी, भारत में महानगर खड़े हो चुके थे।

लगभग 3300–1900 ईसा पूर्व

अध्याय दो · लगभग 3300–1900 ईसा पूर्व

सिंधु घाटी — समय से आगे के शहर

सिंधु घाटी सभ्यता करीब 15 लाख वर्ग किलोमीटर में फैली थी। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे शहर आज के ग्रिड-सिस्टम शहरों की तरह बने थे — सड़कें 90 डिग्री पर काटती थीं, ईंटों का आकार पूरे साम्राज्य में एक समान था, चाहे शहर हजारों किलोमीटर दूर क्यों न हो। हर घर की नाली एक ढकी हुई मुख्य नाली से जुड़ती थी, जिसे साफ करने के लिए मैनहोल तक बनाए गए थे।

ये लोग किसान ही नहीं, महान व्यापारी भी थे — उनके जहाज अरब सागर पार कर मेसोपोटामिया तक जाते थे। मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार प्राकृतिक तारकोल से वाटरप्रूफ बनाया गया था। लेकिन उनकी लिपि आज तक कोई नहीं पढ़ पाया — यह इतिहास का सबसे बड़ा अनसुलझा रहस्य बना हुआ है। करीब 1900 ईसा पूर्व यह सभ्यता धीरे-धीरे फीकी पड़ने लगी, शायद बदलते नदी मार्गों या सूखे के कारण, और लोग पूर्व की ओर गंगा-यमुना के मैदानों में बसने लगे।

> जिस दिन हम उस लिपि को पढ़ लेंगे, हमें पता चलेगा कि वे कौन थे और वे इतने बुद्धिमान कैसे थे।

जानिए

सिंधु घाटी की लिपि आज तक अपठित है। जब तक इसे पढ़ा नहीं जाता, इस सभ्यता की भाषा और पहचान का सबसे बड़ा रहस्य बना रहेगा।

अध्याय तीन

वैदिक काल — मंत्र, लोहा और दस राजाओं का युद्ध

जहां से भारत को उसका नाम मिला।

लगभग 1500–600 ईसा पूर्व

अध्याय तीन · लगभग 1500–600 ईसा पूर्व

वैदिक काल — मंत्र, लोहा और दस राजाओं का युद्ध

सिंधु घाटी के शहर खामोश हुए तो सरस्वती और सिंधु नदियों के किनारे एक नई गूंज सुनाई देने लगी — वैदिक काल की। इस युग की सबसे बड़ी क्रांति थी लोहे की खोज। लोहे के कुल्हाड़ों ने घने जंगल काटे, लोहे के फाल ने हल को मजबूत किया और पैदावार कई गुना बढ़ी। इसी समृद्धि ने कबीलों के बीच वर्चस्व की होड़ शुरू कर दी।

ऋग्वेद में वर्णित दशराज युद्ध — यानी दस राजाओं का युद्ध — रावी नदी के तट पर लड़ा गया, जहां भरत कबीले के राजा सुदास ने दस कबीलों के महासंघ को हराया। इसी विजय के बाद भरत कबीले का उत्तर भारत पर प्रभुत्व स्थापित हुआ, और उन्हीं के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। यह वह समय था जब चार वेद रचे गए, गुरुकुलों में मौखिक शिक्षा दी जाती थी, और खगोल विज्ञान व गणित की नींव पड़ी।

> इसी गौरवशाली विजय के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

जानिए

'भारत' नाम ऋग्वेद में वर्णित भरत कबीले से आया है, जिसने दशराज युद्ध जीतकर उत्तर भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था।

अध्याय चार

सोलह महाजनपद और दो जागरण

जब तलवार के बजाय ज्ञान से दुनिया जीतने वाले दो महापुरुष जन्मे।

लगभग 600 ईसा पूर्व

सोलह महाजनपद और दो जागरण

समय के साथ जनपद विशाल महाजनपदों में बदल गए। करीब 600 ईसा पूर्व तक उत्तर भारत 16 महाजनपदों में बंटा था, जिनमें मगध, कौशल, वत्स और अवंती सबसे शक्तिशाली थे। गंगा-सोन के बीच बसा मगध अपनी उपजाऊ भूमि और लोहे की खदानों से अमीर होकर सबसे बड़ी शक्ति बन गया।

इसी दौर में दो महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने तलवार नहीं, ज्ञान से दुनिया बदली। राजपाट छोड़कर सत्य की खोज में निकले सिद्धार्थ गौतम बुद्ध कहलाए और अहिंसा-प्रेम का मार्ग दिखाया। उसी समय महावीर जैन ने आत्मसंयम और 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया। यह भारत के दर्शन और अध्यात्म का स्वर्णिम काल था — शांति की यह गूंज जल्द ही युद्ध के नगाड़ों से टकराने वाली थी।

> जब समाज कर्मकांडों में उलझा था, तब सिद्धार्थ ने राजपाट छोड़कर सत्य की खोज चुनी।

जानिए

भगवान बुद्ध और भगवान महावीर लगभग समकालीन थे — दोनों ने एक ही सदी में, एक ही क्षेत्र से, अहिंसा पर आधारित नई दार्शनिक धाराएं शुरू कीं जो आज भी करोड़ों लोगों का मार्गदर्शन करती हैं।

अध्याय पांच

सिकंदर सिंधु के तट पर

विश्व विजेता जब भारत की सरहद पर आकर रुक गया।

326 ईसा पूर्व

अध्याय पांच · 326 ईसा पूर्व

सिकंदर सिंधु के तट पर

326 ईसा पूर्व में यूनान का राजा सिकंदर खैबर दर्रा पार कर सिंधु नदी तक पहुंचा। झेलम नदी के किनारे उसका सामना हुआ पंजाब के वीर राजा पोरस से — यह युद्ध हाइडेस्पीज़ का युद्ध कहलाया। पोरस के हाथियों के सामने सिकंदर की सेना ने ऐसा प्रतिरोध पहली बार देखा। पोरस हारे पर उनकी बहादुरी से प्रभावित होकर सिकंदर ने उनका राज्य वापस लौटा दिया और मित्रता कर ली।

लेकिन यहीं सिकंदर की विजय-यात्रा थम गई। उसकी थकी सेना ने व्यास नदी पार करने से इनकार कर दिया — आगे मगध की विशाल सेना और राजा धनानंद का खौफ था। विश्व विजेता को भारत की सरहद से वापस लौटना पड़ा, और लौटते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। सिकंदर चला गया, पर पीछे छोड़ गया एक बिखरा हुआ उत्तर-पश्चिम भारत — और एक अहंकारी राजा धनानंद के अधीन कराहती हुई प्रजा।

> विश्व विजेता सिकंदर को आखिरकार भारत की सरहदों से वापस लौटना पड़ा।

जानिए

सिकंदर की सेना ने भारत में हाइडेस्पीज़ के युद्ध में युद्ध-हाथियों का सामना किया — यह अनुभव इतना भयावह था कि उसकी सेना ने आगे बढ़ने से साफ मना कर दिया।

अध्याय छह

चाणक्य की प्रतिज्ञा और साम्राज्य का जन्म

एक अपमानित ब्राह्मण ने खोली अखंड भारत की राह।

321 ईसा पूर्व

अध्याय छह · 321 ईसा पूर्व

चाणक्य की प्रतिज्ञा और साम्राज्य का जन्म

तक्षशिला के विद्वान आचार्य चाणक्य को जब मगध के अहंकारी राजा धनानंद ने अपमानित किया, तो उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि जब तक इस साम्राज्य को जड़ से नहीं मिटाएंगे, अपनी शिखा नहीं बांधेंगे। उन्होंने एक प्रतिभाशाली युवक चंद्रगुप्त को शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा दी। चाणक्य की कूटनीति और चंद्रगुप्त के साहस ने मिलकर धनानंद का अंत कर दिया और मौर्य साम्राज्य की नींव रखी।

सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस ने भारत पर दोबारा दावा करने की कोशिश की, पर चंद्रगुप्त की सेना ने उसे करारी शिकस्त दी। संधि में सेल्यूकस ने काबुल-कंधार जैसे क्षेत्र भारत को सौंपे और अपनी बेटी का विवाह चंद्रगुप्त से किया — भारत की सीमाएं पहली बार ईरान तक पहुंच गईं। इस तरह भारत के पहले बड़े, एकीकृत साम्राज्य की स्थापना हुई, जिसे आगे चलकर एक और भी महान सम्राट विरासत में मिलने वाला था।

> जब तक क्रूर साम्राज्य जड़ से न मिटे, चाणक्य ने अपनी शिखा न बांधने की कसम खाई।

जानिए

मौर्य साम्राज्य की सीमाएं संधि के बाद ईरान तक फैल गईं — भारत के इतिहास में पहली बार किसी स्वदेशी साम्राज्य ने इतनी पश्चिमी सीमा तक अपना प्रभाव स्थापित किया।

अध्याय सात

अशोक — कलिंग के रक्त से धर्म चक्र तक

एक विजेता राजा ने युद्ध के मैदान में अपनी तलवार फेंक दी।

268–232 ईसा पूर्व

अध्याय सात · 268–232 ईसा पूर्व

अशोक — कलिंग के रक्त से धर्म चक्र तक

चंद्रगुप्त के बाद बिंदुसार और फिर सम्राट अशोक गद्दी पर बैठे। अशोक ने साम्राज्य का खूब विस्तार किया, पर 261 ईसा पूर्व का कलिंग युद्ध इतिहास का सबसे बड़ा मोड़ बना। इस युद्ध में करीब एक लाख लोग मारे गए। जब अशोक ने मैदान में खून और लाशें देखीं, तो उनका हृदय कांप उठा — उन्होंने वहीं तलवार फेंक दी और बौद्ध धर्म अपना लिया।

अशोक ने पूरे भारत में शिलालेख और स्तंभ लगवाए, जिनमें से सारनाथ का सिंह स्तंभ आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है। उनके शासन में भारत का संदेश श्रीलंका, म्यांमार और मध्य एशिया तक पहुंचा — तलवार से नहीं, ज्ञान और करुणा के बल पर। लेकिन अशोक के बाद उनके उत्तराधिकारी कमजोर निकले, और धीरे-धीरे मौर्य साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।

> एक विजेता राजा ने कसम खाई — अब वह युद्ध घोष नहीं, धम्म घोष करेगा।

जानिए

सारनाथ का अशोक स्तंभ, जिस पर चार सिंह उकेरे गए हैं, आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है और भारतीय झंडे के बीचोंबीच बना चक्र भी इसी सम्राट की देन है।

अध्याय आठ

व्यापारी, राजा और रेशम मार्ग

जब भारत का प्रभुत्व तलवार से नहीं, टैक्स की चौकी से चलता था।

लगभग 100 ईसा पूर्व – 300 ईस्वी

अध्याय आठ · लगभग 100 ईसा पूर्व – 300 ईस्वी

व्यापारी, राजा और रेशम मार्ग

मौर्य पतन के बाद दक्षिण में सातवाहन राजाओं का उदय हुआ, जिन्होंने अजंता-एलोरा की शुरुआती गुफाएं बनवाईं और अपनी माता का नाम अपने नाम से जोड़ा — जैसे गौतमी पुत्र शातकर्णी — जो उस समाज में स्त्रियों के सम्मान को दर्शाता है। उधर मध्य एशिया से आए कुषाणों का सबसे महान सम्राट कनिष्क था, जिसने 78 ईस्वी में शक संवत की शुरुआत की, जो आज भी भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर है।

कनिष्क की असली ताकत व्यापार थी। उसने मशहूर सिल्क रोड पर नियंत्रण कर चीन से यूरोप जाने वाले रेशम पर टैक्स वसूला, जिससे भारत में सोने की बाढ़ आ गई। उसके दरबार में आयुर्वेद के जनक चरक और कवि अश्वघोष जैसे विद्वान थे। इसी दौर में गांधार और मथुरा कला में पहली बार बुद्ध को मानव रूप में मूर्तियों में उकेरा गया।

> चीन से यूरोप जाने वाले हर रेशम पर कनिष्क टैक्स वसूलता था।

जानिए

शक संवत, जिसकी शुरुआत सम्राट कनिष्क के राज्याभिषेक (78 ईस्वी) से हुई, आज भी भारत सरकार का आधिकारिक राष्ट्रीय कैलेंडर है।

अध्याय नौ

गुप्त साम्राज्य का स्वर्ण युग

जब शून्य का जन्म हुआ और लोहा कभी जंग नहीं खाता था।

लगभग 320–550 ईस्वी

अध्याय नौ · लगभग 320–550 ईस्वी

गुप्त साम्राज्य का स्वर्ण युग

चौथी शताब्दी में मगध की उसी धरती पर गुप्त वंश का उदय हुआ। समुद्रगुप्त — जिसे भारत का नेपोलियन कहा जाता है — ने साम्राज्य का विशाल विस्तार किया। उनके बेटे चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न सुशोभित थे — महाकवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुंतलम रचा, और महान गणितज्ञ आर्यभट्ट ने बताया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है। उन्होंने ही शून्य का सिद्धांत दिया, जिसके बिना आधुनिक विज्ञान असंभव होता।

विक्रमादित्य के समय की इंजीनियरिंग का सबूत आज भी दिल्ली में खड़ा है — कुतुब परिसर का लौह स्तंभ, जिसमें 1600 साल बाद भी जंग नहीं लगा। उनके बेटे कुमारगुप्त ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की, जहां 10,000 छात्र और 2000 शिक्षक पढ़ते थे। पर बार-बार हूणों के आक्रमण और कमजोर उत्तराधिकारियों ने करीब 550 ईस्वी तक इस स्वर्ण युग को धूमिल कर दिया।

> शून्य के बिना आज का विज्ञान और कंप्यूटर नामुमकिन होता।

जानिए

दिल्ली के कुतुब परिसर में खड़ा लौह स्तंभ 1600 साल से धूप-बारिश झेल रहा है, फिर भी उसमें जंग नहीं लगा — आधुनिक विज्ञान आज भी इसकी धातु-तकनीक से हैरान है।

अध्याय दस

हर्ष, नालंदा और एक यात्री की डायरी

जिस राजा ने हर पांच साल में अपना सब कुछ दान कर दिया।

लगभग 606–647 ईस्वी

अध्याय दस · लगभग 606–647 ईस्वी

हर्ष, नालंदा और एक यात्री की डायरी

गुप्त वंश के पतन के बाद उत्तर भारत में अराजकता फैली, जब तक कि सम्राट हर्षवर्धन ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाकर व्यवस्था स्थापित नहीं की। हर्ष अपनी दानवीरता के लिए मशहूर थे — हर पांच साल में प्रयाग में महामोक्ष परिषद आयोजित कर वे अपने गहने-कपड़े तक दान कर देते थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग इसी समय भारत आया और उसने लिखा कि यहां के लोग अपनी जुबान के पक्के थे, घरों में ताले नहीं लगते थे, और सड़कों पर यात्रियों के लिए मुफ्त विश्राम गृह थे।

इस दौर में नालंदा विश्वविद्यालय अपने शिखर पर था। यहां प्रवेश पाने के लिए द्वारपाल कठिन परीक्षा लेता था — अगर उसके सवालों का जवाब न दे पाओ तो अंदर दाखिला नहीं मिलता था। जब हर्ष ने दक्षिण की ओर बढ़ने की कोशिश की, तो चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा नदी के तट पर उन्हें रोक दिया, और नर्मदा उत्तर-दक्षिण भारत की सीमा बन गई।

> जहां के द्वारपाल इतने विद्वान थे, वहां के शिक्षक कैसे होंगे?

जानिए

भारत का मलमल इतना बारीक होता था कि कपड़े का पूरा थान एक अंगूठी के बीच से निकल जाता था — यह विवरण चीनी यात्री ह्वेनसांग के लेखन में मिलता है।

अध्याय ग्यारह

तीन मुकुट, एक शहर

जब कन्नौज की गद्दी के लिए भारत के तीन कोनों की फौजें भिड़ीं।

लगभग 700–900 ईस्वी

अध्याय ग्यारह · लगभग 700–900 ईस्वी

तीन मुकुट, एक शहर

हर्ष के निःसंतान निधन के बाद कन्नौज की गद्दी खाली थी, और उसे पाने का मतलब था पूरे भारत का स्वामी बनना। बंगाल के पाल, राजस्थान के प्रतिहार और दक्कन के राष्ट्रकूट — इन तीन शक्तियों ने करीब 200 सालों तक आपस में युद्ध किया, जिसे इतिहास त्रिपक्षीय संघर्ष कहता है। इसी बीच 712 ईस्वी में अरब सेनापति मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर हमला किया — यह पहली बार था जब विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत की धरती पर पैर जमाए।

पर जब हमलावर राजस्थान की ओर बढ़े, तो उनका सामना हुआ बप्पा रावल से, जिन्होंने न केवल उन्हें खदेड़ा बल्कि अफगानिस्तान-ईरान की सीमा तक खदेड़ते हुए पीछा किया। इसी दौर में राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम ने एलोरा का कैलाश मंदिर बनवाया — एक ही चट्टान को ऊपर से नीचे तराश कर बनाया गया यह मंदिर आज भी इंजीनियरों के लिए पहेली है।

> कहते हैं बप्पा रावल का डर ऐसा था कि दशकों तक किसी ने भारत की सरहद पार करने की हिम्मत नहीं की।

जानिए

एलोरा का कैलाश मंदिर एक ही विशाल चट्टान को ऊपर से नीचे तराश कर बनाया गया है — बिना मशीनों के करीब 2 लाख टन पत्थर इतनी सटीकता से कैसे हटाया गया, यह आज भी इंजीनियरों के लिए रहस्य है।

अध्याय बारह

सोमनाथ की लूट

आस्था के एक केंद्र पर सबसे गहरा घाव।

1025 ईस्वी

अध्याय बारह · 1025 ईस्वी

सोमनाथ की लूट

साल 1000 से 1027 के बीच गजनी के महमूद ने भारत पर 17 बार हमला किया। सबसे दर्दनाक अध्याय तब लिखा गया जब उसने गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर हमला किया — करोड़ों भारतीयों की आस्था का केंद्र। हजारों निहत्थे भक्तों का कत्लेआम हुआ, पवित्र शिवलिंग खंडित किया गया, और मंदिर के हीरे-जवाहरात व सोने का द्वार लूट लिया गया।

गजनी अपने साथ सिर्फ सोना नहीं, भारत का स्वाभिमान भी लूट ले गया। हजारों भारतीयों को गुलाम बनाकर ठंडे रेगिस्तानों में ले जाया गया। पर भारत की मिट्टी इतनी आसानी से टूटने वाली नहीं थी — मालवा के राजा भोज और श्रावस्ती के राजा सुहेलदेव ने बिखरती ताकतों को जोड़ा। 1033 के बहराइच युद्ध में सुहेलदेव ने गजनी की सेना का ऐसा अंत किया कि अगले 150 सालों तक किसी विदेशी की हिम्मत नहीं हुई भारत की ओर आंख उठाने की।

> गजनी भारत से सिर्फ सोना नहीं, हमारा स्वाभिमान भी लूट ले गया।

जानिए

बहराइच के युद्ध (1033) में राजा सुहेलदेव की जीत के बाद अगले करीब 150 वर्षों तक किसी विदेशी आक्रमणकारी ने भारत पर हमला करने की हिम्मत नहीं की।

अध्याय तेरह

अंधे राजा का आखिरी तीर

एक दोहा, एक आवाज़, और इतिहास का सबसे भावुक बदला।

1191 – 1192 ईस्वी

अध्याय तेरह · 1191–1192 ईस्वी

अंधे राजा का आखिरी तीर

दिल्ली-अजमेर के सम्राट पृथ्वीराज चौहान शब्दभेदी बाण चलाने की कला में माहिर थे। 1191 में तराइन के पहले युद्ध में उन्होंने मोहम्मद गौरी को बुरी तरह हराया, और बंदी बनाए गए गौरी को दरियादिली दिखाते हुए माफ कर दिया। पर 1192 में गौरी वापस लौटा — इस बार कन्नौज के राजा जयचंद की गद्दारी के साथ। रात के अंधेरे में छल से हमला कर पृथ्वीराज को बंदी बना लिया गया और गजनी ले जाया गया, जहां उनकी आंखों में गर्म सलाखें डाल दी गईं।

फिर भी इतिहास का वह भावुक पल आया जब पृथ्वीराज के मित्र कवि चंद्रबरदाई ने गौरी को एक आखिरी कला दिखाने के लिए राजी किया। अंधे सम्राट के हाथ में धनुष दिया गया। एक दोहे के इशारे से आवाज़ की दिशा भांपकर पृथ्वीराज ने वह बाण छोड़ा जिसने गौरी का सीना चीर दिया। दोनों मित्रों ने फिर एक-दूसरे को अंतिम विदाई दी। पृथ्वीराज के जाते ही दिल्ली के द्वार विदेशी शासन के लिए खुल गए।

> चार बांस, चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण — ऊपर सुल्तान है, मत चूको चौहान।

जानिए

अंधे कर दिए जाने के बाद भी पृथ्वीराज चौहान ने केवल एक कवि के दोहे में छिपे संकेत से गौरी की आवाज़ की दिशा भांपकर अपना अंतिम बाण चलाया था।

अध्याय चौदह

वह आग जो बुझी नहीं

जब एक पुस्तकालय तीन महीने तक जलता रहा।

1193–1303 ईस्वी

अध्याय चौदह · 1193–1303 ईस्वी

वह आग जो बुझी नहीं

पृथ्वीराज के बाद बख्तियार खिलजी ने 1193 में नालंदा विश्वविद्यालय को जला डाला — दुनिया का वह पुस्तकालय जिसमें हजारों वर्षों का ज्ञान समाया था, तीन महीने तक जलता रहा। 1206 में मोहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी। बाद में अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 में चित्तौड़गढ़ को घेरा। महारावल रत्न सिंह की बहादुर सेना के बावजूद, जब हार निश्चित दिखी, तो राजपूत योद्धाओं ने केसरिया चुना और रानी पद्मिनी के नेतृत्व में हजारों वीरांगनाओं ने जौहर कर लिया।

यह भारत के इतिहास का सबसे मार्मिक अध्याय है — जहां सम्मान की रक्षा के लिए जीवन ही न्योछावर कर दिया गया। लेकिन इसी तबाही से एक नई शक्ति उभरने वाली थी। तुंगभद्रा नदी के किनारे दो भाइयों, हरिहर और बुक्का, ने विजयनगर साम्राज्य की नींव रखी — जो अगले 300 सालों तक दक्षिण भारत की संस्कृति की रक्षा करने वाला था।

> चीखें नहीं थीं — सिर्फ एक सन्नाटा था और हर हर महादेव का उद्घोष।

जानिए

नालंदा की धर्मगंज लाइब्रेरी में इतनी पांडुलिपियां थीं कि 1193 में जलाए जाने पर वह लगातार तीन महीनों तक जलती रही।

अध्याय पंद्रह

हीरों का शहर — विजयनगर

जहां बाजारों में हीरे-मोती बोरियों में तौलकर बिकते थे।

1336–1565 ईस्वी

अध्याय पंद्रह · 1336–1565 ईस्वी

हीरों का शहर — विजयनगर

वि्जयनगर की राजधानी हम्पी दुनिया के सबसे खूबसूरत और अमीर शहरों में गिनी जाती थी। विदेशी यात्री अब्दुल रज्जाक ने लिखा कि उसने दुनिया भर घूमकर भी विजयनगर जैसा भव्य शहर कहीं नहीं देखा। यहां के महानतम राजा कृष्णदेव राय जितने बड़े योद्धा थे, उतने ही बड़े विद्वान भी — मुगल बादशाह बाबर ने अपनी आत्मकथा में उन्हें भारत का सबसे शक्तिशाली राजा बताया। हम्पी का विट्ठल मंदिर, जिसके पत्थर के खंभों से संगीत निकलता है, आज भी इंजीनियरों के लिए पहेली है।

विजयनगर केवल एक राज्य नहीं, एक शरणस्थली थी — उत्तर भारत से भागे विद्वान-कलाकारों को यहां आसरा मिला। पर यह समृद्धि पड़ोसी सल्तनतों को खटकती थी। 1565 के तालीकोटा युद्ध में विश्वासघात के चलते विजयनगर हार गया, और हमलावरों ने छह महीनों तक हम्पी को लूटा-जलाया। फिर भी विजयनगर अपना काम कर चुका था — दक्षिण भारत की संस्कृति और मंदिर आज भी उसके योद्धाओं के बलिदान की गवाही देते हैं।

> मैंने पूरी दुनिया घूमी है, पर विजयनगर जैसा शहर न आंखों ने देखा, न कानों ने सुना।

जानिए

हम्पी के विट्ठल मंदिर के पत्थर के खंभे थपथपाने पर संगीत के सुर निकालते हैं — यह वास्तुकला आज भी वैज्ञानिकों के लिए अनसुलझी पहेली है।

अध्याय सोलह

बाबर की तोपें और गिरता ताज

जब बारूद ने हाथियों की ताकत को बेबस कर दिया।

1526 ईस्वी

अध्याय सोलह · 1526 ईस्वी

बाबर की तोपें और गिरता ताज

1526 में पानीपत के मैदान में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी की एक लाख सैनिकों वाली सेना का सामना काबुल से आए बाबर की मात्र 12,000 सैनिकों की सेना से हुआ। पर बाबर के पास एक नई ताकत थी — तोपें और बारूद। पहली बार भारत की धरती पर तोपों की गड़गड़ाहट ने हाथियों को डरा दिया, लोदी की सेना खुद अपने ही हाथियों तले कुचली गई, और दिल्ली पर मुगलों का झंडा फहरा दिया गया।

पर असली चुनौती अभी बाकी थी। मेवाड़ के महाराणा सांगा — जिनके शरीर पर 80 घाव थे, एक हाथ और एक आंख नहीं थी — ने राजपूतों को एक साथ खड़ा किया। खानवा के मैदान में राजपूतों की जीत लगभग तय थी, पर अंतिम समय में एक सहयोगी की गद्दारी से राणा सांगा घायल होकर गिरे, और सेना बिखर गई। बाबर की जीत के साथ ही भारत में एक नई विदेशी सत्ता जड़ें जमाने लगी।

> भारत की धरती पर पहली बार तोपों के धमाकों ने युद्ध के हाथियों को डरा दिया था।

जानिए

महाराणा सांगा के शरीर पर युद्धों के 80 घाव के निशान थे, एक आंख और एक हाथ नहीं था, फिर भी वे स्वयं युद्धभूमि का नेतृत्व करते थे।

अध्याय सत्रह

जिस राजा ने जंगल चुना

घास की रोटी और एक कसम जो कभी नहीं टूटी।

1572–1597 ईस्वी

अध्याय सत्रह · 1572–1597 ईस्वी

जिस राजा ने जंगल चुना

अकबर ने जब चित्तौड़ पर कब्जा किया, तो 30,000 निहत्थे नागरिकों का नरसंहार करवाया — यह घाव मेवाड़ कभी नहीं भूला। इसी राख से उठा महाराणा प्रताप, जिन्होंने राजसी सुख त्याग कर अरावली के जंगलों को अपना घर बनाया। एक बार भूख से तड़पती अपनी बेटी के हाथ से घास की रोटी भी एक जंगली बिल्ली छीन ले गई — इस पीड़ा ने प्रताप का संकल्प और मजबूत कर दिया कि जब तक चित्तौड़ आजाद नहीं होगा, वे सोने-चांदी के बर्तन में भोजन नहीं करेंगे।

स्थानीय भील आदिवासियों ने प्रताप को अपना बेटा माना और उन्हें जंगल में छिपने की कला सिखाई। 1576 के हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप के घोड़े चेतक ने एक पैर कटा होने के बावजूद 25 फीट का नाला पार कर अपने स्वामी की जान बचाई, फिर दम तोड़ दिया। प्रताप कभी झुके नहीं — अकबर अपनी सारी दौलत और सेना के बावजूद उनका सिर कभी नहीं झुका पाया।

> जब तक चित्तौड़ आजाद नहीं होगा, मैं सोने-चांदी की थाली में नहीं खाऊंगा।

जानिए

महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक ने हल्दीघाटी युद्ध में एक पैर कट जाने के बावजूद 25 फीट चौड़ा नाला पार कर अपने स्वामी की जान बचाई थी।

अध्याय अठारह

संगमरमर और वेदना — शाहजहां का साम्राज्य

एक इमारत जितनी खूबसूरत, उतनी ही भारी थी उसकी कीमत।

1628–1658 ईस्वी

संगमरमर और वेदना — शाहजहां का साम्राज्य

शाहजहां को इमारतों से गहरा लगाव था। उन्होंने दिल्ली में लाल किला बनवाया, जिसके भीतर दीवान-ए-खास में कोहिनूर जड़ा मयूर सिंहासन रखा था। आगरा में अपनी बेगम मुमताज की याद में उन्होंने ताजमहल बनवाया — 22 साल तक 20,000 मजदूरों ने दिन-रात काम किया। पर इस खूबसूरती की कीमत आम जनता ने भारी टैक्स और लगान से चुकाई; जब देश के कई हिस्सों में अकाल पड़ रहे थे, तब सरकारी खजाना संगमरमर पर पानी की तरह बहाया जा रहा था।

इतिहास का सबसे बड़ा विरोधाभास तब सामने आया जब जिस शाहजहां ने दुनिया को ताजमहल दिया, उसे उसके ही बेटे औरंगजेब ने कैद कर लिया। सत्ता की हवस में औरंगजेब ने अपने भाइयों का खून बहाया। 1658 में गद्दी संभालते ही संगीत पर पाबंदी लगी, कलाओं का गला घोंटा गया, और मंदिर तोड़े जाने लगे — पर दक्षिण की पहाड़ियों में एक नई गर्जना जन्म ले रही थी।

> जिस शाहजहां ने दुनिया को ताजमहल दिया, उसे ही उसके बेटे ने कैद कर लिया।

जानिए

ताजमहल बनाने में करीब 20,000 मजदूरों को 22 साल लगे, और इसे मकराना के संगमरमर व श्रीलंका-बगदाद से मंगाए गए कीमती पत्थरों से सजाया गया था।

अध्याय उन्नीस

महाराष्ट्र का शेर — शिवाजी

16 साल की उम्र में जिसने एक किला जीतकर मुगलों की नींद उड़ा दी।

1630–1680 ईस्वी

अध्याय उन्नीस · 1630–1680 ईस्वी

महाराष्ट्र का शेर — शिवाजी

माता जीजाबाई के संस्कारों और गुरु कोंडदेव की शिक्षा में पले शिवाजी ने मात्र 16 साल की उम्र में तोरणा किला जीतकर मुगलों-सुल्तानों की नींद उड़ा दी। उन्होंने राजाओं की मदद नहीं ली, बल्कि साधारण किसानों और मावलों को साथ लेकर एक नई सेना खड़ी की। जब बीजापुर के दैत्याकार सेनापति अफजल खान ने उन्हें छल से मारने की कोशिश की, शिवाजी ने अपने बाघ नख से उसका ही अंत कर दिया।

औरंगजेब ने छल से शिवाजी को आगरा बुलाकर नजरबंद कर दिया, पर वे मिठाई की टोकरियों में छिपकर निकल भागे। 1674 में रायगढ़ किले पर उनका राज्याभिषेक हुआ और वे छत्रपति बने — उन्होंने भारतीय नौसेना की नींव रखी, संस्कृत को बढ़ावा दिया, और आदेश दिया कि उनकी सेना का कोई सैनिक किसान के खेत से एक पत्ता भी बिना पूछे न तोड़े। 1680 में उनके निधन पर पूरा भारत रो पड़ा था।

> सेना का कोई भी जवान किसी किसान के खेत से एक साग का पत्ता भी बिना पूछे नहीं तोड़ेगा।

जानिए

शिवाजी महाराज ने जिस नौसेना की स्थापना की, उसे आज भारतीय नौसेना का जनक माना जाता है — तटीय किलों और युद्धपोतों की एक पूरी रणनीति उन्होंने खुद विकसित की थी।

अध्याय बीस

संभाजी — खाल उधड़ी, आस्था अडिग

40 दिनों की यातना, और एक भी शब्द शिकायत का नहीं।

1681–1689 ईस्वी

संभाजी — खाल उधड़ी, आस्था अडिग

शिवाजी के बड़े बेटे छत्रपति संभाजी महाराज ने अपने नौ साल के शासनकाल में 120 से ज्यादा युद्ध लड़े और एक भी नहीं हारा। पर अपने ही साले की गद्दारी से वे बंदी बना लिए गए। औरंगजेब ने उनके सामने तीन शर्तें रखीं — खजाना, किले और धर्म परिवर्तन। संभाजी ने गर्जना करते हुए कहा कि पूरा साम्राज्य मिलने पर भी वे अपना धर्म और स्वाभिमान नहीं छोड़ेंगे।

इसके बाद औरंगजेब ने क्रूरता की सारी हदें पार कर दीं — 40 दिनों तक रोज उनके शरीर से खाल खींची गई, नमक छिड़का गया, अंततः उनकी हत्या कर दी गई। पर संभाजी ने एक बार भी उफ् नहीं की। उनके बलिदान ने पूरे महाराष्ट्र में ऐसी आग लगा दी कि हर घर से एक योद्धा निकल पड़ा, और औरंगजेब अगले 27 सालों तक दक्कन के जंगलों में भटकता रहा, अपनी दौलत-सेना गंवाकर अंततः वहीं दफन हो गया।

> अगर तुम मुझे अपनी बेटी भी दे दो और पूरा साम्राज्य भी, तब भी मैं अपना धर्म और स्वाभिमान नहीं छोड़ूंगा।

जानिए

संभाजी महाराज की शहादत के बाद औरंगजेब अगले 27 वर्षों तक दक्कन में मराठा प्रतिरोध से जूझता रहा और अंततः उसी धरती पर उसकी मृत्यु हुई।

अध्याय इक्कीस

वह कंपनी जो ताज बन गई

हाथ जोड़कर व्यापार मांगने वाले, धीरे-धीरे मालिक कैसे बन गए।

1600–1857 ईस्वी

वह कंपनी जो ताज बन गई

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल सत्ता का किला बिखरने लगा। नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली ने दिल्ली को बुरी तरह लूटा — नादिर शाह कोहिनूर हीरा और मयूर सिंहासन तक ले गया। इसी उथल-पुथल में ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेज व्यापारी धीरे-धीरे अपने पैर जमाने लगे। 1757 में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर की गद्दारी ने प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों को जीत दिला दी — बंगाल अब उनकी मुट्ठी में था।

अंग्रेजों ने बंगाल के खजाने को इस कदर लूटा कि अकाल पड़ गया। बुनकरों के अंगूठे कटवा दिए गए ताकि भारतीय कपड़ा उद्योग खत्म हो, और किसानों को जबरन नील की खेती करनी पड़ी। अंग्रेजों ने राजाओं के बीच फूट डाली, सुरक्षा के बहाने भारी टैक्स वसूला, और धीरे-धीरे पूरे राज्य हड़प लिए। भारत जो कभी ज्ञान और धन का केंद्र था, अब एक विशाल जेल में बदलता जा रहा था।

> भारत जो ज्ञान और धन का केंद्र था, अब धीरे-धीरे एक जेल में तब्दील हो रहा था।

जानिए

1757 के प्लासी युद्ध में नवाब सिराजुद्दौला के अपने ही सेनापति मीर जाफर की गद्दारी की वजह से आधी सेना ने युद्ध में हिस्सा ही नहीं लिया — यह अंग्रेजों की भारत में पहली बड़ी राजनीतिक जीत थी।

अध्याय बाईस

1857 — पहली चिंगारी

जब हिंदू और मुसलमान पहली बार एक साथ अंग्रेजों के खिलाफ खड़े हुए।

अध्याय बाईस · 1857 ईस्वी

1857 — पहली चिंगारी

जब अंग्रेजों ने नई एनफील्ड राइफल के कारतूसों में गाय-सूअर की चर्बी होने की बात फैली, तो बैरकपुर के सिपाही मंगल पांडे ने विद्रोह का बिगुल फूंका। उन्हें फांसी दी गई, पर उनकी मौत ने पूरे देश में आग लगा दी। 10 मई 1857 को मेरठ के सिपाहियों ने बगावत की, दिल्ली पहुंचकर बूढ़े मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को फिर से सम्राट घोषित किया। इस क्रांति की सबसे चमकती तलवार थीं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, जिन्होंने अपने दत्तक पुत्र को पीठ पर बांधकर दोनों हाथों में तलवार लिए युद्ध लड़ा।

कानपुर में नाना साहेब और तात्या टोपे ने भी अंग्रेजों को चुनौती दी। यह विद्रोह सिर्फ सिपाहियों का नहीं था — गांव के किसानों ने भी हाथ में कुल्हाड़ी लेकर चौकियों पर हमला किया। अंग्रेजों ने क्रूरता से इसे दबाया, हजारों को सरेआम फांसी दी। क्रांति दब गई, पर भारत की आत्मा जाग चुकी थी — 1858 में सीधा ब्रिटिश ताज का शासन शुरू हुआ, और अब अंग्रेजों ने बंदूक की जगह कानून व शिक्षा को हथियार बनाया।

> विद्रोहियों में अगर कोई अकेला मर्द था, तो वह यह औरत थी — रानी लक्ष्मीबाई के दुश्मन जनरल रोज़ ने खुद यह कहा था।

जानिए

1857 के विद्रोह में पहली बार हिंदू और मुस्लिम सिपाही कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़े — बूढ़े मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को दोनों समुदायों ने अपना प्रतीकात्मक नेता माना।

अध्याय तेईस

नमक, खादी और लाठी वाला आदमी

बिना एक भी गोली चलाए, जिसने साम्राज्य को झुका दिया।

1915–1930 ईस्वी

अध्याय तेईस · 1915–1930 ईस्वी

नमक, खादी और लाठी वाला आदमी

1915 में दक्षिण अफ्रीका से एक दुबले-पतले इंसान भारत लौटा — महात्मा गांधी। उन्होंने बिहार के चंपारण के किसानों के लिए आवाज़ उठाई और बिना हथियार उठाए अंग्रेजों को झुकाया। धीरे-धीरे पूरा भारत उनके पीछे खड़ा हो गया — विदेशी कपड़ों की होली जली, खादी आजादी की वर्दी बन गई। पर 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग में जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलवा दीं — यह घाव हर भारतीय दिल पर हमेशा के लिए अंकित हो गया।

1930 में जब अंग्रेजों ने नमक पर भी टैक्स लगाया, गांधी जी ने दांडी यात्रा निकाली — हजारों लोग पैदल उनके साथ चले। महिलाएं जो घरों से बाहर नहीं निकलती थीं, अब शराब की दुकानों के सामने धरना देने लगीं। भारत अब डरना भूल चुका था। गांधी का अहिंसा आंदोलन इतना शक्तिशाली साबित हुआ कि बिना एक गोली चलाए उसने दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य की नींव हिला दी।

> विदेशी कपड़ों की होली जली और भारत की मिट्टी से बना खादी आजादी की वर्दी बन गया।

जानिए

1930 की दांडी यात्रा में गांधी जी और उनके साथियों ने 24 दिनों में करीब 390 किलोमीटर पैदल चलकर समुद्र तट पर नमक बनाकर अंग्रेजी कानून को खुली चुनौती दी थी।

अध्याय चौबीस

क्रांतिकारी — मातृभूमि के लिए लहू

23 साल की उम्र में हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूमने वाले नौजवान।

1928–1931 ईस्वी

अध्याय चौबीस · 1928–1931 ईस्वी

क्रांतिकारी — मातृभूमि के लिए लहू

गांधी जी के अहिंसा मार्ग के साथ-साथ भारत में एक और जोश उबल रहा था। जब लाला लाजपत राय पर लाठियां बरसाई गईं और उनकी मौत हुई, तो भगत सिंह और उनके साथियों ने बदला लिया। भगत सिंह ने असेंबली में बम फेंका, पर किसी को मारने के लिए नहीं — सोए हुए भारत को जगाने के लिए। भागने के बजाय उन्होंने गिरफ्तारी दी, और 23 मार्च 1931 को महज 23-24 साल की उम्र में 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गाते हुए हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए।

इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में जब चंद्रशेखर आजाद घिर गए, तो उन्होंने कसम निभाई — आजाद ही जिएंगे, आजाद ही मरेंगे — और खुद को आखिरी गोली मार ली। जलियांवाला बाग की मिट्टी देखकर कसम खाने वाले 12 साल के उधम सिंह ने बरसों बाद लंदन जाकर उस नरसंहार के जिम्मेदार को मार गिराया। इन नौजवानों की शहादत ने देश के हर बच्चे को एक क्रांतिकारी बना दिया।

> आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे — चंद्रशेखर आजाद ने कहा था।

जानिए

भगत सिंह और उनके साथियों ने असेंबली में जानबूझकर ऐसी जगह बम फेंका था जहां किसी को चोट न पहुंचे — उनका मकसद हत्या नहीं, बल्कि 'बहरों को सुनाना' था।

अध्याय पच्चीस

सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

1943–1945 ईस्वी

अध्याय पच्चीस · 1943–1945 ईस्वी

सुभाष चंद्र बोस और आजाद हिंद फौज

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि आजादी भीख में नहीं, छीनकर मिलती है। वे भेष बदलकर भारत से निकले, जर्मनी-जापान पहुंचे और आजाद हिंद फौज खड़ी की। पहली बार भारत की बेटियों ने भी कंधे पर बंदूक उठाई और रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट का हिस्सा बनीं। जब आजाद हिंद फौज ने मणिपुर के रास्ते भारत की धरती पर तिरंगा फहराया, तो अंग्रेजों के पैरों तले जमीन खिसक गई।

भले ही नेताजी एक विमान हादसे में लापता हो गए, पर उनके 'जय हिंद' के नारे ने भारतीय सेना के भीतर विद्रोह का बीज बो दिया। जिन भारतीय सिपाहियों के दम पर अंग्रेज टिके थे, अब उन्होंने ही बगावत शुरू कर दी थी। मुंबई में नौसेना के जहाजों पर तिरंगा फहराया गया। अंग्रेज समझ गए — अब भारत पर राज करना असंभव है।

> तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

जानिए

आजाद हिंद फौज की रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट भारत की पहली महिला लड़ाकू टुकड़ी थी, जिसने विदेशी धरती पर प्रशिक्षण लेकर हथियार उठाए।

अध्याय छब्बीस

आधी रात, 1947

जो सोए एक देश में, वे जागे दूसरे में।

अध्याय छब्बीस · 1947 ईस्वी

आधी रात, 1947

एक अंग्रेज अफसर सिरिल रैडक्लिफ, जिसे भारत के भूगोल का ठीक से पता तक नहीं था, ने नक्शे पर एक लकीर खींचकर हजारों साल पुराने रिश्तों को दो टुकड़ों में बांट दिया। 14-15 अगस्त 1947 की वह रात लोग सोए तो एक देश में थे, जागे तो दूसरे में। लाखों लोग अपने ही घरों में परदेसी हो गए — स्टेशनों पर लाशों से भरी ट्रेनें, अपनों से बिछड़ते बच्चे, सड़कों पर बहता खून। वह आजादी हमारे पूर्वजों के खून-आंसुओं से सनी हुई थी।

रात के 12 बजे जब पूरी दुनिया सो रही थी, भारत आजादी की नई सुबह में जाग रहा था। पंडित नेहरू ने लाल किले से तिरंगा फहराया। लोगों की आंखों में दो तरह के आंसू थे — आजादी की खुशी के और अपना घर-बार खोने के गम के। उस जश्न में महात्मा गांधी शामिल नहीं थे — वे बंगाल के गांवों में दंगों की आग बुझा रहे थे।

> लोगों की आंखों में दो तरह के आंसू थे — एक आजादी के, दूसरे अपना घर खोने के।

जानिए

विभाजन की रेखा खींचने वाले अंग्रेज अफसर सिरिल रैडक्लिफ को भारत आने से पहले इस उपमहाद्वीप के भूगोल का व्यावहारिक अनुभव लगभग नहीं था, फिर भी उन्हें महज पांच हफ्तों में यह सीमा तय करनी पड़ी।

अध्याय सत्ताईस

भारत का निर्माण — सरदार पटेल और रियासतों का विलय

562 रियासतों को एक धागे में पिरोने वाला लौह पुरुष।

1947–1950 ईस्वी

अध्याय सत्ताईस · 1947–1950 ईस्वी

भारत का निर्माण — सरदार पटेल और रियासतों का विलय

अंग्रेज भारत को कंगाल छोड़कर गए थे — कुछ ने भविष्यवाणी तक कर दी थी कि भारत टूट कर बिखर जाएगा। आजादी के वक्त भारत 562 छोटी-बड़ी रियासतों में बंटा था, और अंग्रेजों ने चाल चली थी कि जो राजा चाहे, वह आजाद रह सकता है। जूनागढ़ से हैदराबाद तक बगावत के सुर उठ रहे थे। पर सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपनी फौलादी इच्छाशक्ति से इन सभी रियासतों को एक साथ जोड़ दिया।

अगर आज कोई बिना पासपोर्ट के दिल्ली से कन्याकुमारी तक यात्रा कर सकता है, तो यह इसी लौह पुरुष की देन है। इसी दौर में भारत ने अपना संविधान बनाया, जिसने हर नागरिक को समान अधिकार दिए। जहां अंग्रेजों को उम्मीद थी कि भारत बिखर जाएगा, वहां भारत ने एक मजबूत, एकीकृत गणराज्य के रूप में खुद को साबित कर दिखाया।

> अंग्रेजों ने भविष्यवाणी की थी कि भारत बिखर जाएगा — उन्हें हमारे लौह पुरुष की ताकत का अंदाजा नहीं था।

जानिए

आजादी के समय भारत 562 छोटी-बड़ी रियासतों में बंटा था — सरदार पटेल के कूटनीतिक प्रयासों से लगभग सभी रियासतें बिना बड़े रक्तपात के भारतीय संघ में शामिल हो गईं।

अध्याय अट्ठाईस

गणराज्य का उदय — युद्ध, रॉकेट और चांद

जो देश साइकिल पर रॉकेट ढोता था, उसने चांद के दक्षिणी ध्रुव पर झंडा गाड़ दिया।

1950–2024 ईस्वी

गणराज्य का उदय — युद्ध, रॉकेट और चांद

आजादी के बाद भारत को कई युद्धों से गुजरना पड़ा। संसाधन कम थे, पर हमारे जवानों ने रेजांग ला जैसी जगहों पर आखिरी सांस तक लड़कर दुनिया को दिखाया कि भारतीय सैनिक की हिम्मत क्या होती है। 1971 में पाकिस्तान के 93,000 सैनिकों के आत्मसमर्पण के साथ भारत ने इतिहास बदल दिया — यह दुनिया के सबसे बड़े सैन्य समर्पणों में से एक था। जब देश में अनाज की कमी थी, प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने खुद उपवास रखा और किसान-जवान दोनों को एक साथ खड़ा किया।

जिस भारत ने अपना पहला रॉकेट साइकिल पर ढोया था, उसी भारत ने 1974 और 1998 में पोखरण में परमाणु परीक्षण कर दुनिया को अपनी ताकत दिखाई। आज भारत दुनिया का पहला देश है जिसने चांद के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहराया, वह भी बेहद कम लागत में। आज भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है — हम मंदिर भी बना रहे हैं और अंतरिक्ष यान भी, योग-आयुर्वेद भी दुनिया तक पहुंचा रहे हैं और AI-तकनीक में भी आगे बढ़ रहे हैं।

> जहां अमेरिका और रूस जैसे अमीर देश फेल हो गए, वहां हमारे वैज्ञानिकों ने अपनी कम लागत की तकनीक से करिश्मा कर दिखाया।

जानिए

भारत का पहला रॉकेट लॉन्च करने के लिए उसके पुर्जे साइकिल पर लादकर ले जाए गए थे — उसी भारत ने दशकों बाद चांद के दक्षिणी ध्रुव पर तिरंगा फहराया, जहां अमेरिका और रूस जैसे देश असफल रहे थे।

उपसंहार

राख और पुनर्जन्म

एक मिट्टी की कहानी, जो हर बार फिर उठ खड़ी हुई।

राख और पुनर्जन्म

यह था हमारे प्यारे भारत का हजारों साल का सफर — पत्थर के औजारों से शुरू होकर चांद के दक्षिणी ध्रुव तक पहुंचने वाला सफर। इस मिट्टी ने हजारों जख्म सहे, हजारों बार इसे लूटा गया, जलाया गया। पर यह भारत की आत्मा ही है जो हर बार राख से उठ खड़ी हुई। हमने चाणक्य की नीति देखी, महाराणा का स्वाभिमान देखा, शिवाजी का स्वराज देखा और भगत सिंह का अमर बलिदान भी।

इतिहास हमें यह नहीं सिखाता कि हम कितनी बार हारे। इतिहास हमें यह याद दिलाता है कि हम कितनी बार फिर से लड़ने के लिए खड़े हुए। आज जब आप आजाद हवा में सांस ले रहे हैं, तो याद रखिएगा कि इसके पीछे उन करोड़ों गुमनाम नायक-नायिकाओं का खून और पसीना है, जिनका नाम शायद इतिहास के पन्नों में दब गया — पर उनका एहसान इस मिट्टी पर हमेशा रहेगा।

> इतिहास यह याद दिलाता है कि हम कितनी बार हारे नहीं, बल्कि कितनी बार फिर खड़े हुए।

जय हिंद

मेहरगढ़ की पहली झोपड़ी से लेकर चंद्रयान की चांद पर लैंडिंग तक — यह वही मिट्टी है, वही आत्मा है, जो हर बार पहले से अधिक मजबूत होकर लौटी है।

समय-रेखा — एक नज़र में

~7000 ई.पू.	मेहरगढ़ में कृषि व स्थायी बस्ती की शुरुआत
~3300–1900 ई.पू.	सिंधु घाटी सभ्यता का उत्कर्ष
~1500 ई.पू.	वैदिक काल का आरंभ
~600 ई.पू.	16 महाजनपद, बुद्ध व महावीर का जन्म
326 ई.पू.	सिकंदर का सिंधु तक आगमन
321 ई.पू.	मौर्य साम्राज्य की स्थापना
261 ई.पू.	कलिंग युद्ध, अशोक का हृदय-परिवर्तन
78 ई.	शक संवत की शुरुआत — सम्राट कनिष्क
320–550 ई.	गुप्त साम्राज्य का स्वर्ण युग
606–647 ई.	सम्राट हर्षवर्धन, नालंदा अपने शिखर पर
712 ई.	अरब आक्रमणकारियों का सिंध पर हमला
1025 ई.	महमूद गजनी का सोमनाथ पर आक्रमण
1191–92 ई.	पृथ्वीराज चौहान व मोहम्मद गौरी के युद्ध
1193 ई.	नालंदा विश्वविद्यालय का विनाश
1303 ई.	चित्तौड़ का जौहर
1336–1565 ई.	विजयनगर साम्राज्य का उत्कर्ष
1526 ई.	पानीपत का युद्ध, मुगल साम्राज्य की स्थापना
1576 ई.	हल्दीघाटी का युद्ध — महाराणा प्रताप
1630–1680 ई.	छत्रपति शिवाजी महाराज का युग
1689 ई.	छत्रपति संभाजी महाराज की शहादत
1757 ई.	प्लासी का युद्ध — बंगाल पर अंग्रेजी कब्जा
1857 ई.	प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
1919 ई.	जलियांवाला बाग हत्याकांड
1930 ई.	दांडी यात्रा — नमक सत्याग्रह
1931 ई.	भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु की शहादत
1943–45 ई.	आजाद हिंद फौज का अभियान

जय हिंद, जय भारत

उम्मीद है यह पुस्तक आपके भीतर उस मिट्टी के लिए गर्व जगा गई होगी, जिसने हज़ारों वर्षों की यात्रा में कभी हार नहीं मानी।

यह पुस्तक स्वतंत्र रूप से पढ़ने, रखने और साझा करने के लिए है।

जय हिंद

यह ई-पुस्तक निःशुल्क है — पढ़ें, रखें और अपने उन दोस्तों के साथ साझा करें
जिन्हें भारत की यह गाथा पसंद आएगी।

हमारी वेबसाइट पर और भी निःशुल्क ई-पुस्तकें उपलब्ध हैं